

मीडिया की स्वतंत्रता

प्रलिस के लिये:

एडिटर्स गलिड ऑफ इंडिया, प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया (PTI), वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स (WPFI) ।

मेन्स के लिये:

मीडिया और लोकतंत्र की स्वतंत्रता, पेड न्यूज, पक्षपातपूर्ण मीडिया, लोकतंत्र का चौथा स्तंभ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एडिटर्स गलिड ऑफ इंडिया ने कश्मीर प्रेस क्लब के बंद होने पर नाराज़गी जताई है। एडिटर्स गलिड ऑफ इंडिया के मुताबिक, कश्मीर प्रेस क्लब का बंद होना मीडिया की स्वतंत्रता के लिये एक खतरनाक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

- एडिटर्स गलिड की स्थापना वर्ष 1978 में प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा करने और समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के संपादकीय नेतृत्व के मानकों को बढ़ाने के दोहरे उद्देश्यों के साथ की गई थी।

प्रमुख बडि

■ मीडिया और लोकतंत्र की स्वतंत्रता:

- **वचिरों का मुक्त आदान-प्रदान:** लोकतंत्र के सुचारू संचालन के लिये वचिरों का मुक्त आदान-प्रदान, सूचनाओं एवं ज्ञान का मुक्त प्रवाह, वार्ता एवं अलग-अलग दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति काफ़ी महत्त्वपूर्ण है।
 - एक स्वतंत्र प्रेस ही अपने नेताओं की सफलताओं या वफ़िलताओं के बारे में नागरिकों को सूचित कर सकता है।
 - यह लोगों की ज़रूरतों और इच्छाओं को सरकारी नक़ियों तक पहुँचाता है, सूचिति नरिणय लेने में मदद करता है और परिणामस्वरूप समाज को मज़बूत करता है।
 - यह अलग-अलग वचिरों के बीच स्वतंत्र वार्ता को बढ़ावा देता है, जो व्यक्तियों को राजनीतिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने में मददगार होता है।
- **सरकार को जवाबदेह बनाना:** फ़्री मीडिया लोगों को सरकार के फैसलों पर सवाल खड़ा करने में मदद करता है और उसे आम जनमानस के प्रति जवाबदेह बनाता है।
- **हाशयि पर पड़े लोगों की आवाज़:** जनता की आवाज़ होने के कारण स्वतंत्र मीडिया उन्हें राय व्यक्त करने का अधिकार देता है।
 - इस प्रकार लोकतंत्र में स्वतंत्र मीडिया महत्त्वपूर्ण है।
- **लोकतंत्र का चौथा स्तंभ:** इन वशिषताओं के कारण मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जा सकता है, अन्य तीन वधियाक़ि, कार्यपालक़ि और न्यायपालक़ि हैं।

■ प्रेस की स्वतंत्रता को खतरा:

- **फ़ेक न्यूज़:** सोशल मीडिया लोगों को अपनी बात रखने का पर्याप्त मौका देता है। कभी-कभी इसका इस्तेमाल कसिी के द्वारा अफवाह फैलाने और गलत सूचना फैलाने के लिये भी क़िया जा सकता है।
- **पेड न्यूज़:** भ्रष्टाचार-पेड न्यूज़, एडवर्टोरयिल और फ़ेक न्यूज़ स्वतंत्र और नषिपक्ष मीडिया के लिये खतरा हैं।
- **पत्रकारों पर हमला:** पत्रकारों की सुरक्षा सबसे बड़ा मुद्दा है, संवेदनशील मुद्दों को कवर करने वाले पत्रकारों पर हत्याएँ और हमले आम घटनाएँ हैं।
 - सोशल मीडिया पर साझा और प्रसारति अभद्र भाषा को सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले पत्रकारों के खलिाफ लक्षति क़िया जाता है।
 - **'फ़्रीडम इन द वर्ल्ड 2021** (फ़्रीडम हाउस, यूएस)', **'हयुमन राइट्स रिपोर्ट, 2020** (यूएस स्टेट डपिरटमेंट)', **'ऑटोकरेटाइजेशन गोज़ वायरल** (वी-डेम इंस्टीट्यूट, स्वीडन)' जैसी रिपोर्टों ने भारत में पत्रकारों को मलिी धमकी को उजागर क़िया है।
- **पक्षपातपूर्ण मीडिया:** कॉरपोरेट और राजनीतिक शक्ति ने प्रटि व वजुअल दोनों तरह के मीडिया के बड़े हसिसे को व्याकुल कर दया है जो नहिति स्वार्थों को जन्म देता है तथा स्वतंत्रता को नषट कर देता है।

■ भारत में प्रेस की स्वतंत्रता:

- रोमेश थापर बनाम मद्रास राज्य, 1950: रोमेश थापर बनाम मद्रास राज्य में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि प्रेस की स्वतंत्रता सभी लोकतांत्रिक संगठनों की नींव है।
- अनुच्छेद 19 के तहत मौलिक अधिकार: भारतीय संविधान अनुच्छेद 19 के तहत भाषण और अभिव्यक्तिकी स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जो 'भाषण की स्वतंत्रता आदिके संबंध में कुछ अधिकारों के संरक्षण' से संबंधित है।
- नहिती अधिकार: प्रेस की स्वतंत्रता भारतीय कानूनी प्रणाली द्वारा स्पष्ट रूप से संरक्षित नहीं है, लेकिन यह संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (ए) के तहत संरक्षित है।
 - एक कानून इस अधिकार के प्रयोग पर केवल प्रतिबंध लगा सकता है, यह अनुच्छेद 19 (2) के तहत कुछ प्रतिबंधों का सामना करता है, जो इस प्रकार हैं:
 - भारत की संप्रभुता और अखंडता
 - राज्य की सुरक्षा
 - विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध
 - सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता या में
 - न्यायालय की अवमानना
 - मानहानि
 - किसी अपराध के लिये उकसाना।

■ भारतीय प्रेस परिषद (PCI):

- यह भारतीय प्रेस परिषद अधिनियम 1978 के तहत स्थापित एक नियामक संस्था है।
- इसका उद्देश्य प्रेस की स्वतंत्रता को बनाए रखना और भारत में समाचार पत्रों व समाचार एजेंसियों के मानकों को बनाए रखना और सुधारना है।

■ प्रेस की स्वतंत्रता के लिये अंतरराष्ट्रीय पहल:

- विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक, 2021 में भारत को 180 देशों में से 142वें स्थान पर रखा गया है।
- प्रेसि स्थिति 'रिपोर्टरस वरिडिउट बॉर्डरस' (RWB) वार्षिक रूप से 'विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक' (WPI) प्रकाशित करता है।
 - 'विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक' विश्व के 180 देशों में मीडिया के लिये उपलब्ध स्वतंत्रता के स्तर का मूल्यांकन करने व सरकारों और अधिकारियों को स्वतंत्रता के खिलाफ उनकी नीतियों एवं प्रेस की स्वतंत्रता के बारे में जागरूक बनाता है।

आगे की राह

- संस्थागत ढाँचे को सुदृढ़ बनाना: भारतीय प्रेस परिषद, एक नियामक संस्था है जो मीडिया को चेतावनी दे सकती है और नयित्तरति कर सकती है यदि उसे पता चलता है कि किसी समाचार पत्र या समाचार एजेंसी ने मीडिया नैतिकता का उल्लंघन किया है।
 - न्यूज ब्रॉडकास्टरस एसोसिएशन (NBA) को वैधानिक दर्जा दिया जाना चाहिये जो नजिी टेलीविज़न समाचार और करंट अफेयर्स ब्रॉडकास्टरस का प्रतिनिधित्व करता है।
- भ्रामक खबरों से निपटना: मीडिया की स्वतंत्रता को कम कथिे बना उसमें विश्वास बहाल करने के लिये कंटेंट में हेराफेरी और फेक न्यूज को रोकने हेतु नमिन्लखिति को सक्षम करना होगा।
 - लोक शिक्षा,
 - नयिमों का सुदृढीकरण
 - टेक कंपनयियों का प्रयास न्यूज क्यूरेशन के लिये उपयुक्त एल्गोरदिम बनाना है।
- मीडिया नैतिकता: यह महत्त्वपूर्ण है कि मीडिया सच्चाई और सटीकता, पारदर्शिता, स्वतंत्रता, नषिपक्षता, ज़मिमेदारी जैसे मूल सदिधांतों पर टकिा रहे।

स्रोत: द हट्टि